पद्मावत :मानसरोदक-खंड / पद्य सं. 3

मिलहिं रहसि सब चढहिं हिंडोरी । झूलि लेहिं सुख बारी भोरी ॥
झूलि लेहु नैहर जब ताईं । फिरि नहिं झूलन देइहिं साईं ॥
पुनि सासुर लेइ राखहिं तहाँ । नैहर चाह न पाउब जहाँ ॥
कित यह धूप, कहाँ यह छाँहा । रहब सखी बिनु मंदिर माहाँ ॥
गुन पूछहि औ लाइहि दोखू । कौन उतर पाउब तहँ मोखू ॥
सासु ननद के भौंह सिकोरे । रहब सँकोचि दुवौ कर जोरे ॥
कित यह रहसि जो आउब करना । ससुरेइ अंत जनम दुख भरना ॥

कित नैहर पुनि आउब, कित ससुरे यह खेल ।
आपु आपु कहँ होइहिं परब पंखि जस डेलल ॥3॥

भावार्थ:

सभी सखियाँ हिंडोले यानि झूले पर चढ़ती हैं और झूला झूलने के सुख का अपार आनंद लेती हैं. आपस में कहती हैं, जब तक नैहर में हैं तब तक आनंद से झूल लें, विवाह के बाद ससुराल में पति झूलने नहीं देगा. फिर ससुर जैसे चाहेगा रखेगा. नैहर की चाह वहाँ नहीं होगी. वहाँ कहाँ यहाँ की तरह सलोनी धुप होगी, कहाँ यहाँ जैसी शीतल छाया होगी? हे सखी, वहाँ तुम सबसे दूर घर में ही रहना होगा. वहाँ गुण पूछकर उसे दोष बताया जायेगा. उस समय इसका क्या उत्तर मुझे मिलेगा? वहाँ सास-ननद के क्रोध का सामना करना पड़ेगा और वे हमेशा भौंह चढ़कर हमसे बात करेंगी. और हमें संकोचवश अपने हाथ जोड़कर नत होकर ही गुजारा करना होगा और यह सब सहना होगा. वहाँ कहाँ यह आनंद मिलेगा जो आज हमें मिल रहा है, ससुराल में जन्म भर दुःख ही भोगना पड़ता है.

कहाँ फिर नैहर आना होगा ? कहाँ ससुराल में यह आनंद यह खेल हो पायेगा. हम कहाँ फिर पहले जैसे हो पाएंगे ? जैसे बहेलिये की कैद में पक्षी होता है वैसे ही हो जायेंगे.

शब्दार्थ :

हिंडोरी = हिंडोरा/ झूला. जब ताई = जब तक. साईं = ससुर. ससुर = ससुराल. पाउब = पाना. दोखू = दोष. मोखू = मैं. कर = हाथ. पंखि = पक्षी, डेल = बहेलिये का जाल.